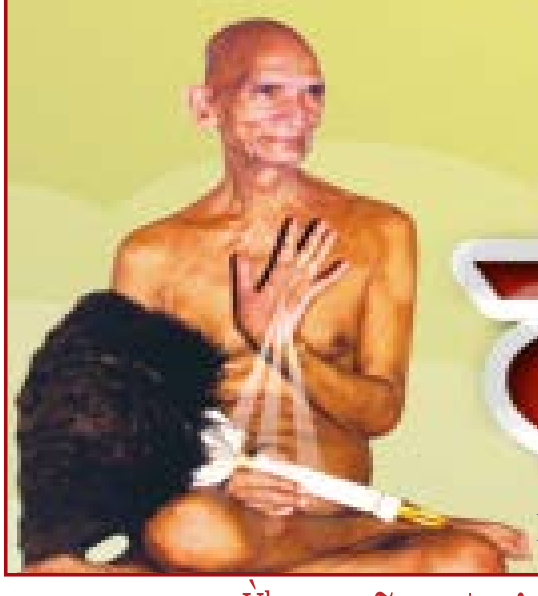

Issue: 146
01 Sept. 2020
www.jainachar.com Daily
जैनाचार
Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

mÙke cãp;Z---ij&inkFkksa dk R;kx

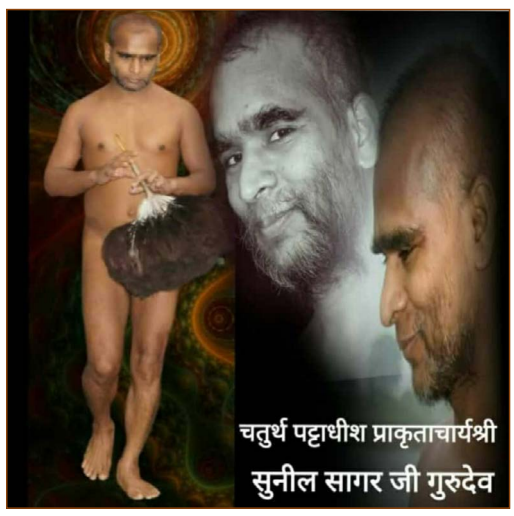

उत्तम क्षमा आदि–आठ धर्म–साधन रूप धर्म होते हैं, जिनके अंगीकार करने पर साध्य रूप धर्म ब्रह्मचर्य की उपलब्धि स्वयंमेव हो जाती है। जब कोई साधक क्रोध, मान, माया, लोभ एवं पर–पदार्थों का त्याग आदि करते हैं और पर–पदार्थों से संबंध टूट जाने से जीव का अपनी आत्मा (जिसे ब्रह्म कहा जाता है) में ही रमण होने लगता है।

इसे ही उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म कहा जाता है। यही धर्म के दशलक्षण हैं, जो पर्युषण पर्व के रूप में आकर हमें सुख–शांति का संदेश देते हैं। ब्रह्मचर्य हमें सिखाता है कि उन परिग्रहो का त्याग करना जो हमारे भौतिक संपर्क से जुडी हुई है। जैसे जमीन पर सोना न कि गद्दे तकियों पर, जरुरत से ज्यादा किसी वस्तु का उपयोग न करना, व्यय, मोह, वासना ना रखते सादगी से जीवन व्यतित करना।

ब्रह्म जिसका मतलब आत्मा, और चर्या का मतलब रखना, इसको मिलाकर ब्रह्मचर्य शब्द बना है, ब्रह्मचर्य का मतलब अपनी आत्मा मे रहना है। ब्रह्मचर्य का पालन करने से आपको पूरे ब्रह्मांड का ज्ञान और शक्ति प्राप्त होगी और ऐसा न करने पर आप सिर्फ अपनी इच्छाओं और कामनाओ के गुलाम ही हैं। पर्यूषण पर्व मनाने का मूल उद्देश्य आत्मा को शुद्ध बनाने के लिए आवश्यक उपक्रमों पर ध्यान केंद्रित करना होता है। पर्यावरण का शोधन इसके लिए वांछनीय माना जाता है। आत्मा को पर्यावरण के प्रति तटस्थ या वीतराग बनाए बिना शुद्ध स्वरूप प्रदान करना संभव नहीं है। इस दृष्टि से तत्वार्थ सूत्र का वाचन और विवेचन किया जाता है और संत–मुनियों और विद्वानों के सान्निध्य में स्वाध्याय किया जाता है। पूजा, अर्चना, आरती, समागम, त्याग, तपस्या, उपवास में अधिक से अधिक समय व्यतीत किया जाता है और दैनिक व्यावसायिक तथा सावद्य क्रियाओं से दूर रहने का प्रयास किया जाता है। संयम और विवेक का प्रयोग करने का अभ्यास चलता रहता है।

lnkpkj ds vuqikyu dk uke gS cãp;Z èkeZ

–डॉ. महेन्द्रकुमार जैन मनुज, इन्दौर, 9826091247

उत्तम ब्रह्मचर्य है आत्मा में आचरण करनाआत्मा में विचरण करना ही ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य तो आत्मा के कल्याण का मार्ग है, साधन है। सादगी पूर्ण जीवन जीना, राग भाव का ना होना और इंद्रियों से नाता तोड़कर अपने आप को ध्यान के लिए तैयार कर लेना ही वास्तव में ब्रह्मचर्य धर्म है। ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करने से शक्ति का संचार होता है, स्मरण शक्ति बढ़ती है और चेहरे पर चमक आती है। ब्रह्मचर्य धर्म के निर्वाह के लिए इंद्रियों पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। स्त्री के अंग, उपांग आदि को देखता हुआ भी जो ज्ञानी विकार को प्राप्त नहीं होता है उसको ब्रह्मचर्य व्रत है। कितने सारे शीलवती स्त्रियों के उदाहरण आते हैं। चेलना, चंदना, अनंतमति आदि बहुत सारे नाम आते हैं। वर्तमान में भी ऐसी स्त्रियां हैं जो दृढ़ प्रतिज्ञ हैंब्रह्मचर्य में प्रसिद्ध हैं सुदर्शन सेठ। महावीर भगवान पार्श्वनाथ भगवान के लिए भी बहुत प्रयास किया गया कि इनका भी विवाह हो जाए। लेकिन वे भी अपने शील से, स्वभाव से विचलित नहीं हुए। नेमिनाथ भगवान् का तो प्रसिद्ध है कि उनका तो विवाह का कार्यक्रम भी चालू हो गया था। लेकिन फिर भी जब आत्म स्वरूप का भान होता है, वैराग्य होता तो सब कुछ तुच्छ लगने लगता है। उत्तम ब्रह्मचर्य के धारक तो वे हैं तो असिधार व्रत का पान करते हैं।

असिधार ब्रह्मचर्य व्रत का उल्लेख और कथानक प्रथमानुयोग के ग्रन्थों में आता है। जीवानी–जल झानने पर छन्ने में बचा हुआ जहां से पानी लिया है वहीं पहुचाना होता है। जिससे जीव हिंसा न हो। एक ग्रहस्थ से वह जीवानी जल नीचे ढुल जाता है। इस गल्ती का प्रायश्चित्ता मांगने वह मुनिराज के पास जाता है। मुनिराज कहते हैं जो व्यक्ति या दंपति असिधार ब्रह्मचर्य व्रत कर रहे हों उन्हें भोजन करवायें। उसने कहा मुझे पता कैसे चलेगा कि अमुक व्यक्ति असिधार ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर रहा है। मुनिराज ने कहा अपने नगर और आस पास के गांवों के लोगों को वारी वारी से अपने चंदोवे के नीचे बैठाकर भोजन करवाएं, जिसके भोजन करने पर तुम्हारे यहां बंधा हुआ चंदोबा सफेद हो जायगा समझना वह व्यक्ति या युगल असिधार ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर रहा है। विशेषतः कच्चे घरों में जहां भोजन बनता है वहां चूल्हा और भोजन करने के स्थान के ऊपर कपड़ा बांधते थे जिससे भोजन में छप्पर से किसी तरह की गंदगी या जीव–जंतु न गिर जायें उस बंधे हुए कपड़े को चंदोबा कहते है।

उस व्यक्ति ने लोगों को वारी वारी से भोजन कराना प्रारंभ किया। कुछ महिनों बाद एक युगल ने भोजन किया और चंदोबा गंदले से सफेद हो गया तब उस युगल से किसी तरह पूछा गया कि मुनि महाराज ने जो कहा था वह सही हुआ है। कृपया बतायें आप कैसा असिधार व्रत कर रहे हैं, उन्होंने इससे पहले किसी को कुछ नहीं बताया था, अपने घर के लोगों को भी नहीं। मुनिराज के वचन होने से उन्होंने बताया कि उनके विवाह के पहले से दोनों ने अपने अपने घर त्यागियों से व्रत ले लिए थे। विवाहोपरान्त जब मिलन का समय आया तो उस पुरुष ने कहा कि मेरा तो प्रतिमाह के शुक्लपक्ष का ब्रह्मचर्य व्रत है। कुछ दिन बाद कृष्णपक्ष आयेगा तब मिलन हो सकेगा। कृष्णपक्ष में जब मिलन का समय आया तो उसकी पत्नी ने कहा कि मेरा प्रतिमाह कृष्णपक्ष में ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने का नियम है। दोनों ने कहा कोई बात नहीं हम अपना अपना व्रत पालन करेंगे। उन्होंने व्रत की बात किसी को बताई नहीं। वे ऐसे ही दृढ़ता से पालन कर रहे थे। ये है असिधार व्रत, कि पति–पत्नी साथ होते हुए भी मिलन नहीं कर रहे थे।

आचार्य श्री सुनीलसागर मुनि महाराज ने अपने प्रवचन में महाराज शिवाजी का एक प्रसंग सुनाया था। ऐतिहासिक घटना है जब मुम्बई के प्रान्त पर सामन्तों ने हमला किया। तो वहां से उनको दो चीजें हाथ लग गई और वहां का जो बादशाह था वो तो भाग गया और यहां शिवाजी के लोगों के हाथ में सबसे सुंदर बेगम आ गई और कुरान भी मिला। बड़े खुश होकर के लेकर आये। सबने सोचा कि दोनों चीजों को देखकर छत्रपति शिवाजी महाराज बड़े खुश हो जायेंगे। उनके सामने लाया गयाछत्रपतिजी ने पूछा–इस पालकी में क्या है? उन्होंने कहा–छत्रपतिजी! इसमें दुनिया की सबसे सुंदर चीज है। उन्होंने देखा तो बेगम थी। छत्रपति शिवाजी ने कहा–तुमको शर्म नहीं आती है। अरे! हमने देश सेवा का व्रत लिया है। हमने अपनी माता–बहनों की रक्षा का व्रत लिया है, इसका मतलब ये तो नहीं कि हम दूसरों के साथ अत्याचार करें, दूसरों की माँ–बहन को बुरी नजर से देखें ।

हमें कम से कम तुमसे ये आशा नहीं थी, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। सब को जोरदार फटकार लगाई, आइंदा ऐसा काम नहीं करना। अरे! दूसरों के शास्त्र का भी सम्मान करना सीखो। दूसरे की माँ बहन का सम्मान करना सीखो और उनकी उदारता देखो, उस सुंदर स्त्री के पास गये। उम्र में भले ही उनसे कम थी लेकिन हाथ जोड़कर उनके सामने गये। पहले तो वो डर ही गई, पता नहीं अभी क्या होने वाला है। उन्होंने कहा क्षमा करना, आप वास्तव में सुंदर हैं। ऐसे कहा तो उसको एक और तरह का भय पैदा हुआ। उन्होंने कहा–वास्तव में आप सुंदर हैं, लेकिन आप मेरी माँ होती तो मैं भी आपके जैसा सुंदर पैदा होता। छत्रपतिजी के विचार देखो कितने अच्छे हैं।

परनारी पैनी छुरी, तीनों ओर से खाए। धन छीने यौवन हरे, मरे नरक ले जाए।।

eqfu Jh r#.klkxj th egkjkt ds pj.kksa esa Hkko Hkhuh vfHkO;fä

fnrh; iq.; frfFk ij Hkko Hkhuh fou;katfy

tkx`T;kfr iqat cudj blh èkjk ij vk;k] og eqfu r#.k lkxj dgyk;k

जिसने वर्ष 2000 लाल किले की प्राचीर से अहिंसा शांति का उद्घोष कर दिखाया वह मुनि तरुण सागर कहलाया, वर्ष 1996 रामगंजमंडी की पावन माटी पर जब आपके चरण पडे सारा नगर आपके आगमन को पलक फावडे बिछाकर अगवानी कर रहा था लगभग एक माह के प्रवास जो धर्म की प्रभावना हुयी वह सचमुच एक मिसाल थी हर वर्ग उनकी वाणी को सुनने को आतुर था मानो ऐसा लगता जैसे साक्षात दिव्य ध्वनि खिर रही हो इतना ही नहीं अहिंसा शांति का उद्घोष लिए एक कवी सम्मेलन भी आहूत हुआ जो अदितीय रहा वही प्रथम बार युवा चेतना का उत्साह इतना था की अहिंसा शान्ति का उद्घोष लिए एक पदयात्रा मुनि श्री के सानिध्य मे 2 FEB से 7 FEB तक 1996 मे निकाली गई जो कोटा जाकर सम्पन्न हुयी उनके समीप उनकी वाणी उनकी आशीष का अवसर प्राप्त हुआ प्रवचनों के कडवे वचन पर स्वभाव के निर्मल मुनि श्री तरुण सागर जी सचमुच तरुणों मे तरुण क्रांति के उद्घोषक थे, कुछ पंक्तिया.....

अहिंसा का उद्घोष किया, जन जन का ह्रदय परिवर्तित किया
सचमुच मुनि श्री आपने जिनशासन को जयवंत किया
जन जन की अखिया आज भर आई, मुनि श्री आपको भाव भीनी विदाई

शत शत नमन...... अभिषेक जैन लुहाडिया रामगंजमंडी